मध्यकालीन भारत में स्त्रियों की राजनीतिक स्थिति

डॉ. राकेश रंजन सिन्हा,

एसोशिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
इतिहास विभाग, कुवंर सिंह महाविद्यालय,
लहेरियासराय, दरभंगा।

तुर्को के आने से पूर्व भारत में स्त्रियों की दशा पूर्णतः निराशाजनक न थी। यद्यपि स्वतंत्रता तथा सम्मान के वे अधिकार जो उन्हें प्राचीन भारत में प्राप्त थे धीरे–धीरे समाप्त हो गये थे फिर भी जो कुछ बचे थे वह काफी महत्त्वपूर्ण थे। दिल्ली सुल्तानों के विशाल अन्तःपुर होते थे। उनका काफी समय अपनी पत्नी तथा अन्य स्त्रियों माता, बहन, बुआ आदि रिश्तेदारों के बीच व्यतीत होता था। सुल्तान की माता का सबसे अधिक आदर होता था उसके बाद उसकी मुख्य पत्नी का स्थान था। अन्तःपुर की कुछ महत्त्वाकांक्षी स्त्रियाँ राजनीति में भी भाग लेती थी।

सल्तनत काल की प्रथम स्त्री, जिसने राजनीति में भाग लिया वह थी इल्तुतमिश की पत्नी शाह तुर्कान। यद्यपि इल्तुतमिश ने रजिया को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था फिर भी शाह तुर्कान ने राजनीतिक व्यवस्था में हस्तक्षेप किया। पति की मृत्यु के बाद उसने अपने अयोग्य आराम प्रिय पुत्र रूकनुरुद्दीन फिरोज को गद्दी पर बैठा दिया तथा सारी शक्ति अपने हाथ में ले ली। यहाँ तक कि फरमान भी जारी करने शुरू कर दिये। अन्त में अमीरों ने उसे बंदी बना लिया।

राजनीति में स्त्री के वर्चस्व का दूसरा उदाहरण है रजिया बेगम। उसने अपने गुणों से इल्तुतमिश को इतना प्रभावित किया कि पुत्र के अयोग्य होने के कारण उसने पुत्री को ही अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। सुल्तान ने रजिया को राजनीतिक शिक्षा भी दी थी। रजिया के उत्तराधिकारी घोषित होने से इस्लामी राजनीति में एक कठिन प्रश्न उठ खड़ा हुआ। यद्यपि स्त्रियों को राज्यसत्ता प्राप्त करने का अधिकार फारसी शासकों ने तो दिया था परन्तु भारत में यह बात नई थी। जब से तुर्क लोगों ने इस्लामी संसार पर अधिकार किया तब स्त्रियों के राज्यसत्ता के अधिकार का कोई विरोध नहीं किया गया। ऐसा प्रतीत होता है कि तुर्की शासकों ने फारसी परम्परा को ग्रहण कर लिया था और स्त्रियों के राज्यसत्ता के अधिकार को स्वीकार कर लिया। जब इल्तुतमिश ने रजिया को उत्तराधिकारी घोषित किया तो कुछ दरबारियों ने कहा कि पुत्रों के रहते हुए पुत्री को गद्दी देने की जरूरत नहीं है। परन्तु किसी ने कोई कानूनी विरोध नहीं किया। यह लगता है कि वे लोग इस बात से सहमत न हो सके कि एक स्त्री उन पर शासन करे। वे यह समझते थे कि राज्यसत्ता केवल पुरूषों का ही क्षेत्र और अधिकार है। रजिया ने रूकनुरुद्दीन फिरोज की अयोग्यता से लाभ उठाया और जनता तथा सेना से प्रार्थना करके, कूटनीति से दिल्ली की गद्दी प्राप्त कर ली। राज–गद्दी प्राप्त करने के बाद विरोध शान्त कर दिये और रजिया ने सफलतापूर्वक चार वर्ष तक (1236–1240 ई0) शासन किया।

रजिया का सिंहसनारोहण दिल्ली सल्तनत के राजनीतिक इतिहास में बहुत महत्त्व रखता है। प्रथम बार केवल योग्यता के आधार पर एक स्त्री के गद्दी प्राप्त करने के अधिकार को सम्मान प्रदान किया गया। उसके सिंहासनारोहण ने इस बात को स्पष्ट कर दिया कि सबसे श्रेष्ठ पद सुल्तान के द्वार भी स्त्रियों के लिये खुले हैं। त्रिपाठी के शब्दों में तेरहवीं शताब्दी में यह परम्परा तुर्की सुल्तानों के स्वस्थ एवं ताजे विचारों की संकेतक है। इसके द्वारा व्यक्ति के गुणों पर ध्यान दिया गया। रजिया का उदाहरण राजवंश की अन्य स्त्रियों को राजनीति में भाग लेने के लिये पथ प्रदर्शक उदाहरण बन गया।

लगभग आधी शताब्दी बीत जाने के बाद एक अन्य राजवंश की स्त्री ने भी राजनीति में भाग लिया। यह थी जलालउद्दीन खिलजी की पत्नी तथा रूकुनुरुद्दीन इब्राहिम की माता मलिका–ए–जहान। वह एक महत्त्वाकांक्षी स्त्री थी और अपने स्वाभिमानी स्वभाव के कारण उसने अपने दामाद अलाउद्दीन का घरेलू

जीवन दूभर कर दिया था। यहाँ तक कि अलाउद्दीन को राजधानी छोड़कर गवर्नर के रूप में कड़ा जाना पड़ा। 1299 ई0 में सुल्तान जलालउद्दीन की मृत्यु के बाद उसने अपने पुत्र को गद्दी पर बैठाने का यत्न किया ताकि वह राजनीतिक शक्ति अपने हाथों में ले ले। उसने सुल्तान के ज्येष्ठ पुत्र अरकली खान के अधिकारों की पूर्ण अवहेलना की। उसने धीरे–धीरे राजनीतिक सत्ता अपने हाथों में एकत्रित कर ली और राज–आज्ञाएं जारी करके शासन करना प्रारम्भ कर दिया। कुछ समय बाद अलाउद्दीन ने परिस्थितियों से लाभ उठा कर रूकुनुरूद्दीन पर आक्रमण कर दिया। मालिका–ए–जहान और उसका पुत्र परजित हुए।

अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल में स्त्रियों और अमीरों को राजनीति में हस्तक्षेप का अवसर न मिल सका क्योंकि सुल्तान ने स्वयं सारी शक्ति अपने हाथों में केन्द्रित कर ली थी। अलाउद्दीन के कठोर शासन के अन्तर्गत स्त्रियों को कोई बढ़ावा नहीं मिला। फिर भी उसकी पत्नी कमला देवी ने जो राय करन बघेला की भूतपूर्व रानी थी, सुल्तान को अपनी पुत्री देवल रानी को अपने पास बुलाने के लिए कहा इस कारण सुल्तान ने देवगिरी पर आक्रमण करने के लिए आदेश दिया, क्योंकि उस समय देवल रानी अपने पिता के साथ देवगिरी में शरण ले रही थी। इस तरह अलाउद्दीन के समय में कमला देवी ने भी अप्रत्यक्ष रूप से राजनीति में भाग लेकर अलाउद्दीन को देवगिरी पर आक्रमण के लिए प्रेरित किया।

तुगलग शासक स्त्रियों का बड़ा आदर करते थे। मुहम्मद तुगलक अपनी माता का इतना आदर करता था कि उसे सरकारी मामलों में भी प्रभाव डालने की आज्ञा दे दी थी। ऐसा प्रतीत होता है कि वह सुल्तान की पत्नियों से ज्यादा श्रेष्ठ पद पर थी। मुहम्मद तुगलक की मृत्यु के पश्चात् उसकी बहन खुदावन्दजादा ने अपने पुत्र दखर बक्श को गद्दी पर बैठाने का यत्न किया। अमीर लोगों ने पहले से ही फिरोज तुगलक के विषय में निर्णय ले लिया था। खुदाबन्दजादा ने फिर भी अपने पुत्र के अधिकार पर जोर दिया और यहाँ तक कहा जाता है कि उसने फिरोज तुगलक को मरवाने का यत्न किया परन्तु वह असफल हुई।

लोदी वंश के समय में भी स्त्रियों के समकालीन राजनीति में प्रभाव डालने के उदाहरण प्राप्त होते है। जब बहलोल लोदी और जौनपुर के शर्की शासक में मुठभेड़ हुई तो जौनपुर के राजवंश की स्त्रियों ने राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप किया। जौनपुर में सुल्तान महमूद शर्की की पत्नी बड़ी महत्त्वाकांक्षी थी और वह अपने पिता सुल्तान अलाउद्दीन (जो सैय्यद वंश का शासक था) की बहलोल लोदी द्वारा पराजय का बदला लेना चाहती थी। वह अपने पति को बहलोल लोदी के खिलाफ युद्ध करने को उकसाया। सुल्तान महमूद शर्की की माता बीबी राजी भी बड़ी गुणवान और बुद्धिमान स्त्री थी। सुल्तान महमूद की मृत्यु के बाद उसने अमीरों की मदद ली और राजकुमार मोखन को गद्दी पर बैठाया। वह बहलोल लोदी तथा शर्की सुल्तान के बीच जो भूमि सम्बन्धी झगड़ा था उसे भी सुलझाने में सफल हुई। इस प्रकार जौनपुर की राजनीति में उसने काफी प्रभाव डाला और राजकुमार हुसैन को गद्दी पर बैठाने का भी श्रेय प्राप्त किया। शर्की वंश के अन्तिम शासक हुसैन शाह की पत्नी मलिका–ए–जहान ने भी समकालीन राजनीति में हस्तक्षेप किया। यद्यपि सुल्तान बहलोल और उसके पति के बीच संधि हो गई थी फिर भी उसने अपने पति को उसके विरूद्ध युद्ध करने के लिये उकसाया।

लोदी वंश की स्त्रियां भी राजनीति में काफी दिलचस्पी लेती थी। शम्सखातून, जो बहलोल लोदी की मुख्य पत्नी थी उसने सुल्तान को मजबूर किया कि वह तब तक शांत न हो जब तक उसके भाई कुतुबखान, जिसे सुल्तान महमूद शिर्की ने पकड़ लिया था, छोड़ न दे। बीबी अम्मा, जो बहलोल लोदी की हिन्दू पत्नी और निजाम खान (सिकन्दर लोदी) की माता थी एक महत्त्वाकांक्षी स्त्री थी। अपने पति की मृत्यु के बाद उसने यह देखा कि राजगद्दी के लिए उसके पुत्र के अधिकार की अवहेलना की जा रही है क्योंकि वह हिन्दू माँ से उत्पन्न हुआ था। बीबी अम्मा ने कुछ अफगान अमीरों की सहायता ली और अपने पुत्र के अधिकार की मांग की। ऐसा कहा जाता है कि उसने पर्दे के पीछे से एकत्रित अमीरों से अपने पुत्र के लिये परामर्श किया और वह उसे गद्दी प्राप्त करवाने में सफल सिद्ध हुई। इस प्रकार लोदी काल तक बराबर स्त्रियाँ राजनीति में दिलचस्पी लेती रहीं।

इसी तरह प्रांतीय राज्य कश्मीर में उदयनदेव (1323–1339 ई0) के गद्दी पर बैठते ही तीन दलो में सत्ता के लिए संघर्ष आरंभ हो गया। इस त्रिपक्षीय संघर्ष में शाहमीर केन्द्रीय शक्ति था। उदयनदेव एक अयोग्य शासक सिद्ध हुआ। इसने रिंचन की विधवा कोटा रानी से विवाह किया। कोटा रानी एक योग्य और

महत्वाकांक्षी महिला थी। सत्ता की शक्ति उसक हाथों में केन्द्रित थी। इसी समय मंगोलो ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। उदयनदेव अपनी पत्नी कोटा रानी को छोड़कर लद्दाख की ओर भाग गया। ऐसी स्थिति में कोटा रानी ने अपनी योग्यता का परिचय देते हुए शाहमीर की सहायता से आक्रमणकारियों को मार भगायां शाहमीर के मंगोलो के विरूद्ध पुरुषार्थ ने उसे अत्यंत लोकप्रिय बना दिया। फलस्वरूप स्थिति का लाभ उठाकर शाहमीर सत्ता को हथियाने का प्रयास करने लगा। इसी बीच 1339 ई0 में उदयनदेव की मृत्यु हो गई। कोटा रानी ने स्वयं को शासक घोषित किया। शाहमीर ने उसका विरोध किया। उसने इन्दरकोट के किले में कोटा रानी को घेर लिया तथा अन्त में उसे अपने साथ विवाह करने के लिए बाध्य किया। फारसी स्त्रोतों के अनुसार रानी कोटा ने शाहमीर के शयन कक्ष में छूरा भोंककर आत्महत्या कर ली।

पश्चिम भारत में गुजरात के शासक मुहम्मद शाह द्वितीय ने जब ईदर के राजा राय हर पर आक्रमण किया तो राजा राय हर ने मुहम्मद शाह की विशाल सेना को दखकर अपनी सुन्दर पुत्री का विवाह मुहम्मद से कर के उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। अपने पति पर उसका इतना अधिक प्रभाव था कि विवाह के तुरंत पश्चात् उसने ईदर का राज्य अपने पिता को वापस दिला दिया। उसके अधीन हिन्दूओं ने उच्च सरकारी पदों पर कार्य किया।

इसी तरह मुजफ्फर शाह द्वितीय के शासनकाल में उसकी पत्नी बीबी रानी एक अति सुन्दरी युवती थी और सुल्तान पर उसका सबसे अधिक प्रभाव था। राज महल तथा सेना का नियंत्रण उसी के हाथ में था। उसकी सेवा में सात हजार सरकारी कर्मचारी थे और राज्य के मामलों में वह प्रभावशाली परामर्शदात्री थी।

इसी संदर्भ में "मकदुम ओ जहान" भी थी जिसने बहमनी परिवार के निजामशाही की ओर से दक्कन का शासन सूत्र संभाला था।

दक्षिण भारत में भी विजय नगर राज्य के महिलाओं ने राजनीति में अपनी भूमिका निभाई। अच्युतदेव राय की मृत्यु के बाद उसके साले सलकराज तिरुमल ने अच्युत के अल्पव्यस्क पुत्र वेंकट प्रथम को सिंहासन पर बैठाया तथा वास्तविक सत्ता अपने हाथ में रखा। किन्तु राजमाता वरदाम्बिका अपने पुत्र वेंकट को अपने कुटिल भाई तिरुमल के चंगुल से छुड़ाना चाहती थी। अतः उसने इब्राहीम आदिल शाह से सहायता की याचना की। किन्तु तिरुमल ने इब्राहीम को फोड़ कर अपने पक्ष में कर लिया। इसी बीच रामराय ने सदाशिवराय को शासक घोषित कर दिया। तिरुमल ने इब्राहीम आदिल शाह को सहायता के लिए आमंत्रित किया। अन्ततः रामराय ने तिरुमल को कई युद्धों में परास्त कर अच्युतदेव राय के भतीजे सदाशिवराय को गद्दी पर बैठाया।

इस तरह हम देखते है कि पूर्व मध्यकाल में पुरूष प्रधान समाज में भी कुछ महिलाओं ने अपनी योग्यता के बल पर तत्कालीन राजनीतिक में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संदर्भ ग्रंथः–

1. डॉ0 लईक अहमद, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति।
2. मजूमदार, राय चौधरी एण्ड दत्त, एन एडवांसड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, भाग–2 1952
3. नीरज श्रीवास्तवा, मध्यकालीन भारत प्रशासन, समाज एवं संस्कृति।
4. हबीव निजामी, दिल्ली सल्तनत।
5. आई0 एस0 कुरैशी, एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द सुल्तान ऑफ देहली,
6. रहीस सिंह, मध्यकालीन भारत, दिल्ली सल्तनत।
7. आर0 पी0 त्रिपाठी, सम ऑस्पेक्ट ऑफ मुस्लिम एडमिनिस्ट्रेशन।